International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-05-2024, Accepted: 14-06-2024, Published: 11-07-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 5-8

गोविन्द मिश्र के प्रयुक्त पात्रों में अभिव्यक्त मूल्य बोध

सोनिया सांगवान
हिन्दी विभाग, ओम् स्ट्रिलिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, चंडीगढ, हिसार, हरियाणा, भारत

सारांश
नैतिक मूल्यों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है क्योंकि मानव समाज अपने कार्य व्यवहार, संस्कार, आचरण, संस्कार चिंतन से समाज को सुंदर बनाने की कल्पना करता है। इसके निमित वह दूसरों के लिए कुछ त्याग करता है व कष्ट सहता है और इन्हीं नियमों का प्रतिबिम्बन पात्रों द्वारा करते, साहित्यकार समाज में व्याप्त अंधविश्वास रूढ़ियां, भ्रष्टाचार आदि बुराइयों को चुनौतियां भी देता है। गोविन्द मिश्र की कहानियाँ समाज परक है। समाज की यथार्थपरक स्थितियों के पात्र प्रतिनिधि रूप में इन कहानियों में प्रयुक्त है, वास्तविकता जहां अपने करम यथार्थ रूप में दिखाई देती है। किन्तु ऐसे भी पात्र है जो अपने जीवन को समाज के प्रति समर्पित किए हुए हैं। अथवा वैयक्तिक जीवन में नैतिक जीवन व्यतीत करके घर की नींव बने हुए हैं। राजनीतिक क्षेत्र में निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले या अपनी राजनैतिक पार्टी को जिताने के रात–दिन एक करने वाले व्यक्तियों को उस क्षेत्र में वह सम्मान नहीं मिलता जैसा कि निष्काषित कहानी में प्रदर्शित किया गया है। विश्वासघात का सहारा लेकर अपना स्वार्थ साधने वाले लोगों के मध्य सामाजिक शाश्वत और वैयक्तिक नीतियों की मसाल लेकर मार्गदर्शन करने वाले कम ही लोग मिलते हैं। फिर भी समाज तो इन्हीं के बलबूते ही अपनी सही दिशा का निर्धारण करता है।

मूल शब्दः परम्पराओं, मान्यताओं, रूढ़िया, रीति–रिवाज, शोषण, समर्पण, व्यंजित, संस्कृति

मूल्य
मूल्य को अंग्रेजी में अंसनम कहते हैं। टंसनम शब्द का उद्भव अंसनतम शब्द से हुआ है जो लैटिन भाषा का शब्द है। जिसका तात्पर्य महत्व, उपयोगिता अथवा वांछनीयता से लगाया जाता है। मूल्य समाज में विभिन्न आदर्शों प्रतिमानों के रूप में समाज को उचित दिशा निर्देश प्रदान करते हैं। मूल्य समाज में किसी व्यवहार के वास्तविक प्रभाव को खोजने का एक सांस्कृतिक माध्यम है। मूल्य शाश्वत व्यवहार है। मानवीय जीवन को मूल्यवान बनाने की क्षमता रखने वाले गुणों को जीवन मूल्य कहा जाता है। अर्नन के अनुसार, जो मानवीय इच्छा की तुष्टि करे वही मूल्य है। मूल्य वह वस्तु है जो जीवन को सदैव विकास की ओर ले जाती है और उसे सुरक्षित रखती है।

गोविन्द मिश्र के प्रयुक्त पात्रों में अभिव्यक्त मूल्य बोध
मनुष्य अपने परिवेश से जुड़ा होता है और बाह्य व आंतरिक व्यवहार परिवेश से ही प्रभावित होता है। सामाजिक जीवन एवं दायित्व बोध का अनुभव करके वह मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है और इसी से उसका व्यक्तित्व व चरित्र निखरता है। ये मूल्य जीवन को गतिशील ही नहीं बनाते अपितु एक नई जीवन दृष्टि का सूत्रपात भी करते हैं। समय–समय पर मूल्यों के श्रोत बदलते रहते हैं। समस्त विश्व में भौतिकतावादी प्रगति की हवा चली जिसका प्रभाव भारत वर्ष के समाज पर भी पड़ा किन्तु वैज्ञानिक सोच के अभाव में यहां का समाज सामाजिक मूल्यहीनता और जड़ता का शिकार बना। क्योंकि तथाकथित उच्च वर्ग एवं भ्रष्ट नौकरशाहों को मिला। सामान्य जनता गरीब से और अधिक गरीब होती गई। शोषण इसकी नियति बन गया है। ऐसी विषम परिस्थिति में सामाजिक बिखराव, आर्थिक दबाव के कारण मूल्यों में परिवर्तन हुआ। राजनीति भी अर्थ की प्रधानता के कारण प्रभावित हुई और परम्परागत देश प्रेम, त्याग, बलिदान जैसे शाश्वत मूल्यों का क्षरण हुआ। आजादी के पश्चात जीवन के प्रगति हेतु अंधी दौड़ में शामिल जन साधारण भी अच्छे बुरे विचारों को भूला बैठा है। फलतः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ पुराने मूल्यों के प्रति आसक्ति किंतु अधिकांशतः नये मूल्यों का चित्रांकन गोविन्द मिश्र की कहानियों में हुआ है। हम यहां राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की चर्चा कर एतद विषयक उदाहरण देकर यह विश्लेषण करने का प्रयास करेंगे कि गोविन्द मिश्र के रचना संसार में जिस समाज का चित्रण हुआ है उसमें मूल्यबोधों की क्या स्थिति है। सामाजिक रूप में मूल्यों की अवधारणा उनके विकास का स्वरूप एतद विषयक पात्रों की सोच का विश्लेषण करेंगें क्योंकि सामाजिक मूल्यों से ही किसी समाज की प्रगतिशीलता मापी जा सकती है।

गोविन्द मिश्र के पात्रों में व्यंजित सामाजिक मूल्य
युग परिवर्तन के साथ सामाजिक मूल्य बदलते है। समाज में स्थायित्व के लिए शाश्वत मूल्यों का स्थायित्व उतना ही आवश्यक है जितना कि नये मूल्यों की अवधारणा का विकास गोविन्द मिश्र ने समाज में व्याप्त दुराचरण, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, अन्तरजातीय विवाह, नर–नारी पुरूष संबंध आदि मूल्यों की चर्चा पात्रों के चरित्र–चित्रण के माध्यम से की है। नये मूल्यबोधों का उल्लेख कहीं दो पीढ़ियों के मध्य अंतराल के माध्यम से व्यक्त किया गया है जिसे समाजशास्त्री जनरेशन गैप कहते हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् समाज में जिस प्रकार का नया वातावरण उसमें एक ओर संयुक्त परिवार का विभाजन, एकल, परिवारों की मान्यता। साथ ही पति–पत्नी के संबंधों में भी आर्थिक दबाव या नैतिकता के कारण जो उन्मुक्ता आयी है विशेष रूप से महानगरों में उसका विस्तृत चित्रांकन गोविन्द मिश्र की कहानियों में हुआ है।

नया परिवेश
स्वतन्त्रता के पश्चात् औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक प्रगति और पंचवर्षीय योजनाओं के कारण समाज में एक नया परिवेश आ गया। नारी शिक्षा की इस परिवेश में महत्वपूर्ण भूमिका है। माता–पिता के सामने यदि एक ओर अच्छे विवाह की कामना है तो दूसरी ओर लड़की को शिक्षित कर एक नयी व्यापक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने की अवधारणा भी उनके मन में ढ़की छिपी रूप में व्यंजित हुई है। जैसे भटकता तिनका में लिखा है ''एक लड़की थी नाम था रेणुका, माँ की प्यारी बाप की दुलारी और थी अब

तक कंवारी जिद करके पढ़ती रही इसलिये नहीं की कुछ सीखे बल्कि इसलिए कि कालेज में स्वरूप की नुमांइस अच्छी तरह हो सकती है। मां–बाप ने एम.ए. के बाद शादी की जिद्द की तो इंकार कर बैठी, नई किस्म की लड़की जो ठहरी।''[1] यहां यह देखा जा सकता है कि पीढ़ियों के अंतराल और चिंतन में कितना अंतर आ गया है। पहले तो नारियों को सीमित शिक्षा दी जाती थी चिट्ठी–पत्री पढ़ने से लेकर रामायण आदि पढ़ने की योग्यता के साथ घर गृहस्थी के कार्यों का दायित्व मुख्य रूप से मूल्य बोध थे और जहां माता–पिता ने उचित समझा वहां लड़कियाँ शादी करवाकर, भावी पीढ़ी की वंशधर बनकर अपने को गौरवान्वित समझती किन्तु गोविन्द मिश्र की यह प्रारम्भिक युग की कहानियाँ है जिनमें आगे आने वाले जीवन मूल्य की आहट सुनाई पड़ती है कि नारी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए अब किसी पर निर्भर नहीं रहने वाली है।

पारिवारिक मूल्य

भारतीय संस्कृति की परिवार संबंधी अवधारणा विश्व भर के समाज शास्त्रियों को अविभूत किये है कि व्यक्ति बिना देखे बिना बातचीत किये ऐसी नारी के साथ शादी के बंधन में बंधकर जीवन व्यतीत करने का अभ्यासी हो गया है। संभवतः यह परस्पर निष्ठा, विश्वास, अन्यन्ता, त्याग जैसे गुणों से जुड़ी हुई दीवार है जो अनेक झंझावातों को सहन करती हुई आ रही है किन्तु अब पाश्चात्य सभ्यता के पनपने व बढ़ने से इसमें दरारें दिखाई देने लगी है। संयुक्त परिवार तो टूटे ही एकल बने परिवार भी बहुत सफल नहीं हो पाये। जैसे झूला कहानी में युवक युवती को बिना देखे बिना बातचीत किए या कुछ दिन साथ रहे बगैर शादी करने से इंकार करता है, ''माँ देखकर पसंद करना एक अलग चीज है मुझे लड़की के साथ कुछ समय तक रहना होगा। बिना साथ रहे आप कैसे किसी के बारे में जान सकते हैं। तुम किस दुनिया में रहती हो माँ। ब्याह तो मेरा होना है जब तक साथ में न रहा जाए क्या पता चलता है। लोग पहले साथ रहते हैं बाद में शादी की बात होती है।''[2]

इसी प्रकार रोता और ख्वाब देखता मुन्ना कहानी में पारिवारिक दायित्वबोध तथा आर्थिक दबावों के कारण व्यक्ति के मन में जो कुंठा उत्पन्न होती है उसका चित्रांकन गोविन्द मिश्र ने बड़ी सूक्ष्मता से किया है ''मैं सरकारी विभाग में हूँ अब बताइये तीन बच्चों की एक की साढ़े ग्यारह रूपये महिना एक का पन्द्रह रूपये और एक सात रूपये प्रतिमाह फीस कहां से लाऊँ, अपने खर्च कम करूं ऑफिस में दो बजे सब चाय पानी करते हैं तब मैं ठंडा पानी पीकर मन बहला लेता हूं सब रिक्सा पर चढ़कर आते हैं तो मैं सड़क पर टूटे जूतों से जिन्दगी घसीटता पहुंचता हूँ।''[2] यहां प्राक्तन ईमानदारी और अधुनातन रिश्वत खोरी के मध्य उभरे मूल्य बोध को संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें परिवार चलाने के लिए व्यक्ति को अपनी आकांक्षाओं का दमन ही करना पड़ता है।

उन्मुक्त यौन संबंध

स्वतन्त्रता प्रापति के पश्चात समाज में विवाह संबंधों को नये ढंग से परिभाषित किया गया कि प्राचीन काल में विवाह एक संस्कार है, पश्चिम में एक समझौता है। यह हवा भारतीय समाज में भी दिखाई देने लगी। स्त्री–पुरूष की समानता के विचार के नारे उछाले जाने लगे। ऐसे नारे नारी को परम्परावादी घेरे से मुक्त कर नये मुल्यों के परिवेश में नई चेतना से युक्त करता और नर–नारी के संबंधों को पुर्नभाषित करता है। ग्रामीण एवं शहरी संस्कृति में नर–नारी संबंधों में एक निष्ठता की मांग करता है तो महानगरों में व्यक्ति पड़ौसी के संबंधों को लेकर चिन्तित नहीं होता ऐसे ही उपेक्षा के कारण उन्मुक्त यौन संबंधों की अवधारणा विकसित हुई जिससे दाम्पत्य जीवन भी अछूता नहीं रहा। गोविन्द मिश्र जी की कहानियों में एक भारी संख्या उन कहानियों की है जो पारम्परिक मूल्यों में विश्वास न कर स्त्री पुरूष दोनों विवाह पूर्व एवं विवाह के बाद संबंध रखने से परहेज नहीं रखते। जिसका घृणितम रूप वहां दिखाई पड़ता है जहां उदर पूर्ति के साथ कुछ विलासिता के साधन के आकर्षण में पति अपनी पत्नि के लिए पराए पुरूष को बुलाकर उससे शारीरिक संबंध के माध्यम से धन प्राप्त करने का प्रयास करता है। उलझती टूटती चूड़ियों में गोविंद मिश्र ने लिखा है, ''अजीब औरत है घर में सब कुछ है पति भी अच्छे खासे हट्टे–कट्टे धनी है फिर क्यों .... मुझे तो पहले दिन ही शक हो गया था उस दिन जब चटर्जी साहब ने परिचय कराया था। मैं सहम गया था उसकी निगाहों से चटर्जी साहब को पता लग गया तो कमाने का जो थोड़ा बहुत साधन बन गया है वह भी गया।''[3]

इस परिवेश को कहानीकार ने पर्दे के भीतर से व्यक्त किया है। इस कहानी में अंयत्र नारी के उद्दीप्त कामनाओं को कारक तत्वों के रूप में निरूपित कर कहानीकार ने लिखा है, ''उभरता ही जाता है शरीर, शरीर पर थपेड़े मारती कामना की लहरें, लहरों पर रोपी गयी मां–बाप के डर की कच्ची दीवार कुछ–कुछ ढह चली आखिर कौमार्य का बोझ कब तक कोई ———— और वह भी तेइस वर्ष का कौमार्य जिसकी बाहरी नसों में सूखापन छाने लगता है।''[4]

गोविन्द मिश्र की कहानियों में इस प्रकार के संबंधों की विस्तृत चर्चा है। इस उन्मुक्त यौन सम्बन्धों के विवाहेत्तर सम्बन्धों की कहानीकार ने अनेक परिस्थितियां कल्पित कर उदाहरण दिये हैं। माध्यम का सुख नामक कहानी में नायिका किस प्रकार माध्यम से अपने पूर्व प्रेमी को याद करती है वह स्वयं स्वीकार करती है कि ''जब कभी सोचती हूँ कि तुम मुझे एक विवाहित की दृष्टिता पर सब की तरह सोचते होंगे सच बताओ तुम मुझे नीच तो नहीं समझते जो हिन्दू स्त्री होकर भी तुम्हारी तरफ इतने निर्लज्ज ढंग से देखा करती मुझे एक अजीब सा सुख मिलता है।[5]

ठहराव की ईंट, एक कटी–छटी अंगडाई, रगड़ खाती आत्महत्यायें, यक्षिणी का पत्र यक्ष के नाम प्रारम्भिक युगीन कहानियां हैं जिसमें यौन संबंधों को नये रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विवाह

भारत वर्ष में मोझ के लिए 4 पुरूषार्थों की कल्पना की है जिसमें काम प्रमुख है। समाज में मान्यताओं, मर्यादाओं को स्थिर रखने के लिए काम को नियमित करने हेतु विवाह संस्कार की परिकल्पना की गयी है। अतः विवाह काम की आवश्यकताओं के अनुरूप समझौते का रूप धारण कर विकसित हुआ। यही मान्यता आधुनिकता का पर्याय बन गई। कहानीकारों ने इस प्रकार की कहानियाँ भी लिखी है जिससे नारी अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष ही नहीं करती अपितु नये बंधनों को स्वीकार करने में भी तत्पर दिखाई देती है। नारी मुक्त आन्दोलन के मूल में यही प्रेरणाएं सबसे अधिक कारगर सिद्ध हुई है। गोविन्द मिश्र की सामाजिक कहानियों में विवाह को नये ढंग से परिभाषित कर उसके कारक तत्वों की जाँच–पड़ताल भी की गई है।

रूढ़ियां

समाज के सुव्यवस्थित संचालन हेतु समाज–शास्त्रियों ने अनेक नियमों का निर्माण किया है। ये नियम जब तक लचीले व व्यक्ति के हित में रहते हैं तब तक वह इनका पालन करता रहता है किंतु जैसे ही ये नियम व्यक्ति के खिलाफ हो उठते हैं व्यक्ति इन्हें रूढ़ियां, अंधविश्वास आदि की संज्ञा देकर इन्हें तोड़ने का प्रयास किया जाता है।

कंपकपी के दायरे नामक कहानी में कथानायिका को दौरे आते हैं जिन्हें डॉक्टर ये कहता है कि विवाह के पश्चात् इमोशनल

सैटिस्फेक्शन के कारण ये दौरे बंद हो जायेंगे जब उसका प्रेमी अस्पताल में विवाह का प्रस्ताव रखता है तो प्रेमिका असहाय होकर कहती है ''डॉक्टर कहता था इसे जवाब इमोशनल सैफिस्फेक्शन मिलेगा तो अपने आपसे ठीक हो जायेगा तो चले आज ही कर डाले शादी – मैं मंगली हूँ तुम्हारा जीवन बर्बाद न करूंगी। पंडित बाबा कहते थे इस ग्रह की लडकियां पति को चाटकर दम लेती। प्यार की गलियों में सरकने वाली बैलगाड़ी शादी के गढ्डे में आ फंसी।''[6]

इस उदाहरण में कहानीकार ने चोरी छिपे रूढ़ियों को तोड़ने की बात व्यंजित की है पुरानी रूढ़िवादिता को तोड़ स्त्री स्वतंत्र होकर अब पार्टी इत्यादि में बिना पति के जाती है और अपने पति को पिछड़ा कहती है। सतह का झाग कहानी में कहानीकार ने लिखा है ''मैं तो अकेली ही कल की तरह चली जाऊंगी डांस करने को, कोई तुमसे अधिक खुबसूरत और स्मार्ट तो मिल ही जायेगा।'' ''अच्छा मैं क्लब जा रही हूँ ..... कोई बात नहीं खाने के लिए इंतजार न करियेगा। हां देखिये, जरा बच्चों को दूध पिलवा दीजियेगा।''

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है जहां स्त्री को केवल घर की देखभाल व बच्चों की परवरिश की दृष्टि से देखा जाता था वहीं आज यह उन पुरानी रूढ़ियों व मान्यताओं को तोड़ती हुई नजर आती है।

स्वच्छंद जीवन

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय समाज समाज में पुराने अंधविश्वास व रूढ़ियों का तो विरोध किया ही गया है। साथ ही सदियों से उपेक्षित नारी समाज की संघर्ष गाथा विविध रूपों में दिखाई पड़ती है, जिस प्रकार पश्चिम में नारी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक सभी क्षेत्रों में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर उससे अधिक दक्षता, कुशलता, क्षमता का परिचय देती है ऐसी स्वंछंद वायु का बहाव जब भारत वर्ष में हुआ तो नारियों का मन इस स्वंधंदता भरे सिहरन का अनुभव करने के लिए लालायित हो उठा। गोविन्द मिश्र ने कायिक स्तर से लेकर समष्टिगत स्तर तक स्वच्छन्दता का वर्णन किया है। 'एक सड़क दो तस्वीरें' की मंजू इसकी व्याख्या करती हुई कहती है'' लड़की की जिन्दगी बंधनों की रस्सी से कसी रहती है। फिर अगर थोड़े समय के लिए ढ़ीली हो जाती है तो क्यों न इससे खुद को छुटकारा देकर स्वच्छंद होकर घूमें इस स्वच्छंदता ने जो थोड़ा बहुत उतावलापन महकता है वह इसलिए कि यहां के बाद लड़की को पति के घर कैद होना है।''[7]

काल खण्ड नामक कहानी में लेखक ने मुक्ति सिंह के स्वच्छंद जीवन के बारे में लिखा है ''गांव वाले घर में खेती की देखभाल करने वाले भी बहुत थे मुक्ति सिंह जब चाहे मन बहलावे के लिए उधर आवे वरना शहर के घर में नौकर के लिए पड़े रहे।[8]

आर्थिक मूल्य

पहले हमारा भारत देश सोने की चिड़िया कहलाता था। जिसे मुस्लिम शासकों ने तो लूटा ही साथ ही अंग्रेजों ने योजना बद्ध तरीके से जिससे भारत की समग्र सम्पन्नता अंग्रेजों के हाथों में जाने लगी किंतु स्वतंत्रता के पश्चात् बनी पंचवर्षीय योजनाओं से भारत की आर्थिक दशा सुधरनी चाहिए व जीवन स्तर का उन्नयन होना चाहिए था। किंतु प्रशासनिक और आर्थिक ढाँचा कुछ इस प्रकार का बना कि किसान, मजदूर निम्न मध्यम वर्ग के लोग और अधिक गरीब होते गये और अफसरशाही, नेता पूंजीपति क्रमशः अधिक से अधिक धनाढय होकर निम्न वर्ग के लोगों का शोषण करने लगे। परिणाम स्वरूप भारतीय दर्शन में जो अर्थ मोक्ष का साधक था इस अर्थव्यवस्था के कारण सारी नीतियों की तिलांजली दे दी गई व अन्यायपूर्वक धनोपार्जन किया जाने लगा। इस आर्थिक विषमता ने मनुष्य को इतना विवश कर दिया कि वह धनोपार्जन के लिए उचित अनुचित कार्य करने लगा। गोविन्द मिश्र की अधिसंख्यक कहानियाँ सामाजिक सरोकारों से संबंधित हैं जिसमें किसी न किसी बहाने अर्थतंत्र उसके स्त्रोत, अर्थोपार्जन के लिए किये जाने वाले उचित अनुचित उपायों की चर्चा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हुई है। यहां हम देखेंगे कि अर्थ की दृष्टि से देह का मूल्य कितना कम हो गया है। गोविन्द मिश्र की अनेक कहानियों में ऐसे पात्र मिल जायेंगे जो अपनी छोटी–मोटी दैनिक आवश्यकताओं के लिए देह व्यापार में लिप्त हो जाती है। अर्थ के कारण ही शारीरिक शोषण का एक उदाहण दृष्टव्य है 'यक्षिणी का पत्र यक्ष के नाम' कहानी में पिक्चर में करने के लिए डायरेक्टर के अश्लील क्रिया कलापों को मंजूरी देती है फिर उस दिन से अक्सर शाम को ही एक–दूसरे के साथ टहलते। मुझे परमेश्वर बाबू से अंदर ही अंदर एक घृणा सी हो गयी थी लेकिन उनकी पिक्चर में काम जो करना था इसलिए जैसे उनका साथ टहलने में देती पैसे ही अक्सर जब वे अंधेरे के झुटपुट में वे मुझे चिपकाकर चूमने लगते तो मैं खून का घूंट पी पीकर रह जाती थी।''[9]

श्रमिक शोषण का एक उदाहरण दृष्टतव्य है

हाजिरी नाम कहानी में कीली को खदान का मैनेजर धोखे से ले जाता है और बाद में उसको वृद्ध के हाथों सौंप विदेश चला जाता है। अंधेरा होते ही वह दुष्ट आया और बोले चल नजदीक के अस्पताल में दिला लाऊं, मजदूरों का ख्याल रखना तो हमारा फर्ज है। मैं मूरख की बातों में आ गई – होश आया तो कैद थी – कितना क्या बताऊं? शादी कर ली ताकि कुछ शर्म से रह सकूं ––– जब वह यहां लाया तो मेरे पेट में बच्चा था। उसने कुछ रूपये देकर एक अधेड़ से मेरी शादी कर दी।''[10]

रिश्वतखोरी का एक उदाहरण देखिए

रोता और ख्वाब देखता मुन्ना कहानी का प्रधान पात्र रिश्वत लेते हुए स्वंय को स्वीकार करता है वह कहता है – ''हजरी लगाते वक्त हर पार्टी से एक रूपये लेता हूँ। मेरी निगाह में मेरा करप्शन सिर्फ यही है ––––– बढ़ते दाम और न घटती जरूरतें ––– मेरे अफसर साहब उनके लिए भी मुझे क्या कुछ नहीं जुटाना पड़ता।[11]

जिहाद कहानी में रिश्वतखोरी को अफसरशाही के मध्य दिखाया गया है एक आई.ए.एस. अधिकारी कहता है ''बात साफ है, वे उनकी सुनते हैं जो उनका काम करते हैं, घर सामान पहुँचाते हैं ––––– जिसको मौका मिलता है नहीं छोड़ता। आप चारों ओर से मगरों से घिरे हुए है। लोग आप के नाम से पैसा ले भागते हैं।''[12]

नैतिक मूल्य

नैतिक शब्द नीति से बना है। वस्तुतः किसी भी समाज के सफल संचालन में नीति का महत्वपूर्ण योगदान है। समाज तथा राजा द्वारा बनाये गये नियम कानूनों का पालन करना ही नीति है। भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष आकर्षण है। नैतिक नियम शाश्वत या समष्टिगत और व्यक्तिगत दो प्रकार के होते हैं। शाश्वत नियम समाज सापेक्ष होने के कारण अपरिवर्तित से रहते हैं जबकि नैतिक नियम सामाजिक मर्यादाओं के अनुकूल परिस्थिति साफ होने के कारण बदलते रहते हैं।

गोविन्द मिश्र की कहानियों में शाश्वत और व्यक्तिगत दोनों प्रकार के मूल्यों की अभिव्यंजना हुई है। उनमें त्याग दया, परोपकार, ममता, अहिंसा, सदाचरण जैसे व्यक्तिगत नियम है ही साथ ही शील, करूणा, संवेदना, समर्पण सामाजिक मूल्य मिलते हैं। पति के प्रति अनन्य निष्ठा अनेक कहानियों में मिलती है।

कुछ उदाहरण दृष्टव्य है

''पति की आवाज के बाहर जो कुछ था, उनके लिये वह था ही नहीं। अपनी तरफ से कुछ कम ही होता था। वे कब क्या करें यह तय करना उनके पति की जिम्मेदारी थी।[13] सड़ांध कहानी में पत्नी का पति के प्रति विश्वास दृष्टव्य है – ''वह कलपती रहती फिर भी विश्वास था – अपने आदमी का। वह उसे चाहता है उसने घर में भी उसका खटना देखा है, वह जो करेगा ठीक ही करेगा।''[14]

नैतिकता का एक दूसरा स्वरूप

व्यक्तिगत नैतिक नियमों के पालन से जिसमें व्यक्ति अपने परिवार से प्रारम्भ कर उसकी परिधि का विस्तार करता जाता है। वात्सल्य एक ऐसा ही नैतिक नियम है। जिसमें माता–पिता या पारिवारिक अपने प्रिय के प्रति पालन–पोषण दायित्व का निर्वाह करते हुए दिखाई पड़ते हैं। गोविन्द मिश्र के कई पात्रों में वात्सल्य भाव दिखाई पड़ता है।

वरणांजलि कहानी का उदाहरण दृष्टव्य है – ''मैं तुम्हें बड़ा करने इस महानगर में ले आया था ..... बच्चों को पालने, बड़ा करने के लिए प्रसन्न होता था कि तुम सज रहे हो, धीरे–धीरे तुम्हें मैनर्स आना चाहिए, अंग्रेजी बोलना आना चाहिए, जिसका तुम्हारी आयु से अनुपात न बैठे ऐसी पुस्तकों का भार उठाना आना चाहिए, साइकिल चलाना आना चाहिए, घुड़सवारी आना, तैरना आना चाहिए अर्थात् क्या नहीं है जो नहीं आना चाहिए ..... तुम्हें अच्छा लगे या नहीं।''[15]

नये पुराने माँ–बाप कहानी में छोटी बच्ची जो पिता व सौतेली माँ से उपेक्षित होती है जिसे उसकी बड़ी बहन दुलान प्यार देकर वत्सलता का परिचय देती है – ''आज सवेरे जब मैनें नयी दीदी के लिए बापू रात जो रबड़ी लाये थे, खा डाली थी और बापू मुझे मारने लगे थे तो नयी दीदी ने मुझे नहीं बचाया लेकिन पुरानी दीदी मुझे बापू से छुड़ाकर अपने कमरे में ले आयी थी और मुझे चिपटा कर रोयी थी। वह कहती थी, आज से तू मेरे पास सोयाकर और मैं तेरे लिये जिन्दा रहूंगी। ..... दीदी ने कहा था कि वह मुझको छोड़कर नहीं जायेगा। वह मुझे माँ की तरह प्यार करेगी।''[16]

निष्कर्ष

नैतिक मूल्यों का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है क्योंकि मानव अपने व्यवहार, संस्कार व आचरण से ही एक सभ्य समाज की परिकल्पना करता है। मनुष्य आदर्श समाज में जीवन व्यतीत करने की चाह रखता है। इसके लिए वह कुछ कष्ट सहता है व त्याग करता है। गोविन्द मिश्र ने अपने अनेक कहानियों में नैतिक व सामाजिक मूल्यों के बारे में बताया है। भारतीय समाज में परम्परा और नये मूल्यों का संघर्ष प्रबलता से अनुभव किया जा रहा है। आज व्यक्ति इस संघर्ष से उभरने का प्रयास कर रहा है। वर्तमान समाज में रूढ़िगत मान्यताओं का महत्व कम होता जा रहा है। मिश्र जी ने अपनी कहानियों में नैतिक व सामाजिक मूल्यों के बारे में बताया है।

संदर्भ सूची

1. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 77
2. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 1–40
3. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 23
4. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 24
5. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 34
6. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 36
7. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 89
8. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 335
9. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 76
10. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 212
11. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 184
12. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 229
13. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 33
14. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 191
15. निर्झरणी भाग–2, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 240
16. निर्झरणी भाग–1, गोविन्द मिश्र, पृष्ठ सं. 117–118